Publication: Navbharat Times

Headline: Silver not Gold, But not less than Gold

Edition: Delhi / NCR

Date: 25th March, 2011

Coverage –

चांदी सोना नहीं, उससे कम भी नहीं

रमेश तिवारी || नई दिल्ली

चांदी की कीमत लगातार नए रेकॉर्ड बना रही है। गुरुवार को इसकी कीमत एक दिन में 1800 रुपये उछलकर 56400 रुपये प्रति किलो हो गई। पिछले लगभग एक साल में इसकी कीमत दोगुनी से ज्यादा हो गई है। यानी निवेशकों को एक साल में 100 पर्सेंट का रिटर्न मिला। पिछले पांच साल में इसने 240 पर्सेंट का रिटर्न दिया है। एक्सपर्ट्स का कहना है कि निकट भविष्य में चांदी की

जरा रिटर्न तो देखिए

1 जनवरी 2010	:	27,100 रुपये प्रति किलो
24 मार्च 2011	:	56,400 रुपये प्रति किलो

मांग और बढ़ेगी, जिससे इसके दाम चढ़ने का अनुमान है। बॉम्बे बुलियन असोएिशन के प्रेजिडेंट पृथ्वीराज कोठारी का अनुमान है कि आने वाले 2-3 साल में इसकी कीमत एक लाख रुपये प्रति किलो तक हो सकती है।

बढ़ रही डिमांड : इंडस्ट्री में सिल्वर की डिमांड पिछले कुछ साल में तेजी से बढ़ी है। बिजली के उपकरणों और फोटोग्राफी आदि में इसका पहले से इस्तेमाल होता रहा है। अब वॉटर प्यूरिफायर, सोलर पैनलों आदि में भी इसका उपयोग बढ़ रहा है। इंडस्ट्री में इसे रीसाइकल नहीं किया जाता, क्योंकि यह काम मुनाफे का सौदा नहीं माना जाता। इससे चांदी की कमी हो गई है। इस साल चांदी की मांग 3.2 पर्सेंट बढ़ने का अनुमान है, जबकि सप्लाई 1.2 पर्सेंट ही बढ़ सकेगी। नतीजतन कीमतों पर असर दिखना तय है।

दुनिया की नजर : मंदी से उबरने की कोशिश में पश्चिमी देशों में फाइनैंस पोर्टफोलियो का विस्तार हो रहा है। वहां सिल्वर के एक्सचेंज ट्रेडिंग फंड्स में पैसा लगाया जा रहा है। वर्ल्ड सिल्वर सर्वे का भी अनुमान है कि यूरोपीय बाजारों में आर्थिक अनिश्चितता और शेयर बाजार के कमजोर माहौल से चांदी में निवेश के प्रति माहौल बना रहेगा। दुनिया में सबसे ज्यादा चांदी भारत में खपती है। यहां आयात एक साल में 20 पर्सेंट बढ़ा है। चीन 2005 तक चांदी का निर्यातक देश था, अब यह आयातक देश है। जिस धातु पर इन दोनों विशाल देशों की नजर हो, उसकी कीमत क्यों नहीं बढ़ेगी?

खत्म होने के आसार : माना जाता है कि धरती के गर्भ में सोने से ज्यादा चांदी है। लेकिन इसे निकालना आसान नहीं है। इसे अन्य धातुओं के साथ सह-उत्पाद के तौर पर निकाला जाता है। ऐसे में चांदी का उत्पादन दूसरी धातुओं के उत्पादन पर निर्भर है। बीते सालों में चांदी की कीमत कम रहने से इसके उत्पादन पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया। सिल्वर एनालिस्ट थियोडोर बटलर का कहना है कि चांदी की खोज पिछले सत्तर सालों में 10 पर्सेंट रह गई है। नई खोज न होने और मौजूदा भंडार से उत्पादन बढ़ाने से बात बिगड़ती जाएगी। मार्केट फोर्स एनालिसिस के एड्रियन डगलस का कहना है कि 2020 तक चांदी खत्म हो जाएगी।